BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811
Title Code - DELBHO00011
http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2
पाक्षिक पत्रिका | 1 मार्च - 30 अप्रैल, 2025 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

महिला रचनाकार अंक-6 / कहानी संग्रह

मातृभाषा विशेषांक (भाग-2)

अब तक

पूरा विश्व से ...

100 लेखिका

100 भोजपुरी कहानी (चार भाग में)

अउर

अन्य

15 मातृभाषा में

41 लेखिका के

41 कहानी (दू भाग में)

मातृभाषा माने दिल के भाषा

वन्दना यादव

सुगली

"जो काम आसान लागै सै, ओ हे सबते मुस्कल हो सै..."

इस बात नै दोनूं बाळकां ने सोचण ताईं मजबूर कर दिया। अमूमन तो वे घणखरी बात्यां नै समझ ही ले सैं। शहरां मै जिस तरह की बात करी जा सै ना, वा तो बाळकां कै समझ आ ज्या सै पण जब तैं गाम सू बाळकां की दादी आई सै, उनकी समझ गडबडा गी सै। दादी के मामले मे सबद तो बाळकां के समझ आ ज्यां सैं मण बाळकां के लिए बात की गहराई समझणां टेड़ी खीर साबित हो रह्या सै। आज भी यौह हुया। बात सरू कित तें हुई थी अर बढ़ते-बढ़ते कित की कित ही पहुंचगी।

नीरजा ब्याह कै बाद तें ही अपणें आदमी कै साथ दिल्ली आण के रहण लागगी थी। उसकै दोनूं बाळक उरै ही हुये थे। धणी-बीर राजस्थान के सैं इस करके वा अपणें आदमी त अपणी बोली मै ही बात करै सै। बाळक आजकल की बोली बोलै सैं मतलब सहर मै बोली जाण आळी अंग्रेजी मिली हुई हिन्दी। बाळकां नै राजस्थानी समझ तो आवै सै मण या भाषा बोलणा, उनकै बूते की बात कोन्या। या बात परिवार के साथ-साथ सुगली ने भी बेरा सै।

बरसां तें इस्सी घर में काम करते-करते सुगली नै नीरजा भाभी की ढ़ाल घर चलाणो सीख लियो सै। उसके काम ते खुस होकर नीरजा भाभी कदे-काऊ शाब्बासी देण खातिर कह भी दे सै अक 'इब तो तूं मेरी परछाई ही बणगी सै।' इस घर के बाळकां नै तो ठीक तै याद भी कोन्या अक सुगली कद तै उनके साथ सै। जब तै उनकी यादाश्त बणी, उननै सदां ते सुगली अपणे घरां ही देखी सै। घर-बाहर के रोजाना के काम हों या कोई बार-त्यूंहार हो, सुगली पूरे मन तै उरै ही काम करती दिखे सै।

सर्दियाँ की दोफर मै उस दिन बाहर तै सब्जी आळे की आवाज सुण कै नीरजा साग-तरकारी लेण चलीगी थी। हरी सब्जी के साथ उसने मूळी भी खरीद ली। सुगली ने धो-छील कै मूळियाँ में नमक अर नींबू लगा कै घर कां तें देणी सुरू कर दी। ठंड की धूप सेंकते परिवार नै उस दिन जी भर कै मूळी खाई। इस चक्कर मै सुगली जित बैठ कै नीरजा के परिवार ने स्वाद परोस री थी, बालकनी के उस ओड मै कीचड़ सा फैल ग्या।

"देखो, सुगली दीदी कितनी सूगली है।" नीरजा के बेटे नै ताळी बजा-बजा कै कहणा सुरू कर दिया। उसकी छोटी बेटी भी ताली बजाण लाग गी। बाळकां की बात सुण कै परिवार आळा भी हंसण लाग ग्या। सबनै हंसते देखकै सुगली भी हंस पड़ी।

राजस्थानी परिवार कै लिए किसी बीरबानी का नाम सूगली होणा, अचरज की बात थी। इसी करकै परिवार आळे जब-तब सुगली कै नाम ने लेकै हंसी कर लिया करै थे। बड़ों की शह पा कै बाळक भी मजाक कर लिया करै थे। नीरजा भाभी नै सुगली तै जाणै

नामः वन्दना यादव

जन्म तिथिः 1 जुलाई 1972

स्थायी पताः द्वारका, सेक्टर 19 बी, दिल्ली

प्रकाशित किताबः दो उपन्यास, तीन कविता संग्रह, एक बाल उपन्यास सहित पाँच बाल साहित्य की पुस्तकें, यात्रा वृत्तांत, मोटीवेशनल पुस्तक सहित 15 पुस्तकें प्रकाशित।

संप्रतिः लेखन एवं समाज सेवा

कितनी बार उसका नाम रखण कै पीछे की कहाणी पूछी थी। सुगली ने इस बारै में कोई जानकारी नहीं थी। उसकी मासूमियत देखकै नीरजा भाभी कई बार कह्या करती, 'अपणा नाम रखण की कहाणी पता कर।'

जिंदा रहण कै संघर्ष करती सुगली के धोरै इतणे तो संसाधन ही नहीं थे जिनतै वा अपणे नाम की कहाणी को पतो लगावंती। वा तो रोटी कै लिए भी इसी सारस्वत परिवार पर निर्भर करै थी। गिणती की छुट्टी आळी नौकरी मै उसके धोरै इतणा टेम ही नहीं था क वा छुट्टी लेकै अपणे नाम की कथा को पतो लगावंती। घणीं ही बार सोच्या करै थी क गाम मै जा कर अपणीं माँ तै कै बूझगी? वा सोचती क माँ तै किस तरह्यां पूछूं अक मेरौ नाम गंदगी के नाम पर क्यूं राख्यो? जब-जब नीरजा भाभी कै परिवार मै उसके नाम पर बात हुई, सुगली इस बारे में सोच्या जरूर करती पण ज्यादा देर तक इस पर सोचण का उसके धौरै बखत नहीं बच्या करता। इसकै पीछे और भी कई कारण थे।

''माँ नै भी मेरे नाम धरण की कथा को कित बेरो होगो! खुद मेरो अपणों बेटो हुयो थो, जद मैं भी तो अपनी मजी तै उसका नाम नहीं रख सकी थी। आज सै बीस बरस पहले जब मेरी इच्छा नहीं मानी गई तब चालीस-ब्यांलीस बरस पहले मेरी माँ की मरजी नै कूण सुणै था!'' इतणे सोच-विचार कै बाद ही वा अपणी बात पर हंस दे सै। इस हंसी मै कोई दुख नहीं होता और ना ही कोई कमतरी की बात सुणाई देवे सै। इसके बावजूद कुछ मजबूरी की सी बात तो रह्वै ही सै। उसकी हंसी बाळकों की समझ तै बाहर ही र ज्या सै।

'इब कूणसी मेरी जनम पत्री बणणी सै जिसकै लिए नाम, और नाम का अरथ ढूंढण जाऊंगी।' न्यू कह कै वा बात नै टालण की कोसिस करया करै सै।

सारस्वत परिवार की नींद भी ठीक सै नहीं खुलती जब सुगली उनकै घर पहुंच ज्याय सै। नए दिन मै दरवाजे की पहली घंटी बजतै ही सब समझ ज्यां सै अक भार कूण आयो सै। दरवाजे की घंटी बजते ही सब ताईं अपणे आप खबर पूँच ज्याय सै अक नयो दिन निकळ यायो सै अर सुगली भी आ पौंची सै। उसकै आवंतां ही घर के काम कै बोझ तळे दबी जा री नीरजा भाभी नै रसोई की भागदौड तै थोड़ो आराम मिल ज्या सै। नीरजा बाळकां नै सकूल खातर त्यार करण मंड ज्याय सै। साथ की साथ वा बाळकां का टीपन भी पैक करती ज्याय सै अर बाकी को काम सुगली सम्हाळ ले सै।

'भाभी, मेरो छोरा घर कै भार ज्यादा रह सै।' कदे-काऊ सुगली अपनी परेशानी नीरजा तै कै दिया करे थी। घणखरी तो वा अपणे बेटे ने प्रेम करण आळी माँ ही हुया करे थी मण कदे-काऊ इस्सा नहीं भी हो था। इस घर मै बाळकां ने चहकते देखती तो उसके मन कै घाव हरे हो ज्याया करते।

'भाभी, के जाणे मेरो छोरो किस माटी को बण्यो सै। उसनै मेरे साथ बैठणो एक मिन्ट ना सुहावै।' एक दिन दुखी मन तै सुगली ने अपणे मन की बात कही। इतणो कह कर कुछ देर तो वा चुप बैठी रही, फेर चानचुक्यां ही वा रोवण मंड गी। इसे मौकां पै आमतौर पै नीरजा चुप रहकै सुगली की बात सुणती रह सै। इतणे लंबे साथ तै नीरजा समझण लाग गी सै अक सुगली को मन चाहे तौ कभी-कभार वा अपणे बेटे की बुराई कर लै सै लेकिन अपणै बेटे के लिए किसी ओर का कुछ भी कह्या, उसकै बर्दाश्त नहीं होता।

'तूं उसनै कुछ कहती क्यूं नहीं?' एकबार नीरजा ने उसतै कही थी।

'मेरै आगै तो वो एकदम शांत रहै सै। कोई बदमासी नहीं, गाळी-गलौज नहीं, किसी तै लड़ाई-झगड़ा नहीं। किस बात पर टोकूं उसनै? मेरै आगे तो उसकी जीभ तालू तै चिपक ज्याय सै। दुनिया बुराई करे सै मेरे छौरे की। वो कलेक्टर तो बण नहीं गया जो उसते चिढ़ते लोग झूठ बोलते हौगे। कुछ तो सच भी होगा ही न भाभी।' रूंधे गळे तै सुलगी क री थी।

'हम तो उसकी पढ़ाई का खर्चा ही उठा सकै थे, जो उठा ही रह्या सां। रूपए-पैसे की मदद कर सकां सा। बाकी तो तन्ने ही देखणा है। जै वो तेरा कह्या नहीं मानता तो उसनै अपणे साथ लेया, हम समझा कै देख ल्यां।' सुगली की परेसानी सुण कै एक दिन नीरजा नै उसतै कह्या। अगले ही दिन सुगली अपणै बेटे कै साथ हाजिर थी।

नीरजा अर उसकै आदमी नै सुगली का बेटा जितना समझा सकै थे, समझाया। जवान खून कब किसकी सुणै सै मण माँ कै लिहाज मै बेटा चुप रह्यो। अगली बार जद फेर माँ को मन दुख्यो, अर वा रोई, नीरजा नै उसका बेटा फेर बुलवा लिया। इस बार नीरजा नै सुगली के बेटे तै खूब लानतें भेजीं। उसनै अपनी माँ की जिम्मेदारी उठाण खातिर समझायो, माँ को ध्यान रखण खातिर कह्यो। पहले तो छोरो चुप रह्यो मण नीरजा की कही आखरी बात उस कै मन मै फांस सी चुभ गी।

'हम थारै घर तो चोरी नहीं कर रह्या। मेरे बाप नै बीच में ल्याण का के मतबल?' छोरो शेर की ढ़ाल दहाड रो थो। देर ताईं चुप बैठे छोरै मै बाप क नाम पर चानचुक्यां ही विस्फोट सा हो ग्या। माँ अपणे बेटे नै समझाती रही। नीरजा नै अपणे धणी कै ऑफिस मै नौकरी का लालच भी दिया मण जवानी की ओड कदम बढ़ाता बेटा, किस्सै की बात सुणन नै तैयार नहीं था। छौरा चल्या गया अर उसी दिन तै सुगली का व्यवहार भी बदळ ग्या।

'माँ के कळेजे का टुकड़ा है। जितणा

कहणा-सुणना है, वा खुद कहेगी मण किसी ओर का कह्या एक सबद भी उसै बर्दाश्त नहीं होगा।' उस दिन कै बाद सै नीरजा अक्सर कह्या करती।

'ना भाभी। वो मेरै कळेजे का टुकड़ा है मण वो थम दोनूंआं तै बतमीजी नहीं कर सकता। इब उसनै इस चोखट पै कद्दे नहीं ल्याऊं।' दुखी मन तै सुगली बोली।

'भाभी सारे दिन तो मैं ऊरै काम लागी रहूं सूं। सांझ नै घर पौंचते ही उसकी कळह झेलणी पड़ै सै। कदे किस्सी की छोरी छेड़न की सिकायत मिले सै तो कदे कुछ ओर। पहले तो वो मोहल्ले के छोरां का ही लीडर बण्या फिरै था मण इब तो उसके रंग ही अलग हो रै सैं।' दुखी मन तै सुगली बता रही थी। वा जब अपणा दुखड़ा सुणावे सै, नीरजा दिमागी तौर पै अपणा ध्यान ओर कितै ही लगा ले सै। ना वा सुगली का दुख सुणैगी और ना परेसानी होगी।
'भाभी, दो दिन तै छोरो घर नहीं आयो। मन ना लाग रह्यो कित्ते भी।' दोफर की रोटी खाते टेम सुगली बोली।

'उसकै यार-दोस्तां तै बेरो कर, वे ही बता सकें सै।' नीरजा कै धोरे सुगली की परेसानी का यो ही ईलाज था।

सांझ होते-होते सुगली कै फोन प अलग-अलग नंबरां तै फोन आण लाग गे। एक अनजान नंबर तै कई बार फोन आ लिये थे। तंग आ कै इबके उसनै फोन ठा ही लियो। ''पुलिस'' के नाम सै ही सुगली घबरा गी। नीरजा खुद चला कै उसकै साथ पुलिस टेसन गई। सुगली कै बेटे की तलाश मै पुलिस उरे-परे हर ओड छापेमारी कर री थी। आखर गिरफ्तार तो वो होणो ही थो। पुलिस तै मेहनत करवा कै जल्दी ही वो भी गिरफ्तार कर लियो गयो। हर ओड कै समाचारां मै उसके चर्चे हो रे थे। देर साझं घरा जाती जिस लड़की क गैंगरेप अर मर्डर नै देश दहला दिया था, सुगली कै छोरे नै पकड़ते ही उस अपराध के सारे आरोपी पकड़ लिए गए थे।

इस खबर कै आवंतां ही सुगली की हालत खराब हो गी। बेटे की इस हरकत कै बारे मै खबर होते ही उसकै भीतर तै बेटे कै लिए ममता खतम हो गी। अपणे घर मै जो संताप उसनै झेल्या था... जिस जेठ नै पति के बड्डे भाई का मान दिया करै थी, उस्सी नै सारी सीमाएं तोड़ दी थीं। जिस बेटे नै अच्छे संस्कार देणे खातर उसनै घर-परिवार ते वनवास ले लिया था, उसी छौरे नै औरत सरीर की इज्जत नही करी। बल्कि ओ तो अपणे ताऊ तै भी आगे निकळ ग्या।

उस रात सुगली खून कै आँसू रोई। ना कुछ खाया, ना पीया। बस रोवंती रही। खूब रोई, खूब रोई और खूब ही रोई। उसनै इस सबकै लिए खुदको भी कसूरवार ठहराया। रो-रो कै जब हार गी तब हालात पै रौणे कै बदले उसने दोषी का दोष समज्या। आखर मै अपणे जीवंते बेटे का श्राद्ध कर दिया।
अपने बेटे तै उसनै नफरत हो गी थी। जितणा वा बेटे तै दूरी बनाणा चाह्वै थी, अड़ौस-पड़ौस अर पहचान आळे उतणे ही ज्यादा बेटे का जिकर करते। कितणे ही लोकां नै उसते रिश्ता खतम कर लिया था। पहले नीरजा भाभी कै घर तै जाकर वा शाम कै टेम फल बेचने का ठेला लगाया करै थी। इस घटना कै बाद तै उसके ग्राहक टूट गे। इब उसकी पहचान 'बलात्कारी की माँ' कै नाम तै होण लाग गी थी। सबनै उसते दूरी बणा ली। सुगली अपणे आप नै कटघरे मै खड्यो करती, खुदतै सवाल करती। बार-बार पूछती अक सारै हिसाब औरत की देह पर ही क्यूं हो सै? महाभारत कै युद्ध का जिम्मेदार द्रोपदी नै बणाण आळो समाज आज एक माँ कै पीछे पड रह्यो सै। बाप की गळती नही मानी ज्याती, ना छौरे का कुसूर मान्या जा रह्या बल्कि माँ पै तो तलवार तान दी गई सै। वा सोचती रही कि आखर मै इस जुर्म कै लिए वा कसूरवार कैसे हो गी।

हर दिन सुबह-सबेरे नियम तै सुगली काम पै पहुँच ज्याया करै थी। दोफर ताई नीरजा भाभी कै घर का काम करवा कै वा अपणै दूसरे काम कै लिए चली ज्याया करै थी। कदै-काऊ ज्यादा काम होण पर नीरजा उसनै देर ताई रोक लिया करै थी। ठेले कै ग्राहक टूटण तै उसका काम बंद हो ग्या। उसकै सारे काम छूट गे, ठेले तै होण आळी आमदनी बंद हो गी। सुगली की परेसानी देखकै नीरजा नै सुगली अपणे धौरे ही फुल टेम काम पर राख ली।

कुछ दिनां ताई सुगली उदास रही। फेर धीरे-धीरे समय कै साथ उसका जीवन भी बदळ ग्या। नीरजा भाभी कै घर मै उसनै परिवार जैसा मान मिल्या करै था। इन दिनां उसे अपणा घर याद तो नही आया करै थो फेर भी झोपड़ी पै कब्जा बनाए रखणे कै लिए वा रात नै सोवण खातिर अपणी बस्ती मै चली जाया करै थी।

'भाभी, आजकळ आस-पड़ौस कै घरां मै दीमक की सिकायत आ री सै। अपणां घर भी देख ल्यां, कित्ते दीमक चुपके तै सब कुछ ही चट कर ज्याय।' दोफर का काम खतम करकै सुगली सटोर की ओर इसारा करते हुए बोली।

'काल देखांगा।' नीरजा नै उसकी बात टाळ दी।

'तो फेर मैं गमले सुधार री सूं।' कहते हुए वा पौधां की गुड़ाई मै लाग गी। असल बात या सै अक सुगली तै खाली बैठ्या नी जाता। दोफर कै टेम जद नीरजा आराम करै सै, सुगली अपणे लिए कोई ना कोई काम ढूंढ ही लै सै।

'आज फिर सुगली दीदी ने सब सूगला कर दिया।' गमलां की गुड़ाई करते हाणी फरस

पर फैली माट्टी देखकै नीरजा को बेटो कहण लाग्यो।

'बोलने से पहले सोचा करो और भाषा समझे बिना बोलना तो सबसे बड़ी गलती है।' दादी माँ की आवाज तै ही वो चौंक ग्यो।

'दादी माँ सुगली तो गंदगी होता है न। इसका मतलब सुगली दीदी गंदी है। गंदगी फैलाती है।' नीरजा को अंग्रेजी मीडियम सकूल मै पढ़ण आळो बेटो कै रह्यो थो।

'जितना हम जानते हैं, जानकारी उतनी ही नहीं होती बल्कि जानकरी की सीमा असीमित है। किसी विषय के बारे में हम जितना जानते हैं, उससे ज्यादा वह अनजाना रह जाता है।' इन दिनां बाळकां नै दादी की कही बात कम ही समझ आवै सै।

'अब इसमें नई जानकरी कहाँ से आ गई!' दादी की टोकाटाकी तै चिढ़कै नीरजा को बेटो बोल्यो।

'हम तो शब्दकोश के जमाने से हैं। उसमें भी तलाशने पर सारे शब्द नहीं मिलते थे। तुम्हारे गूगल में तो सब मिल जाता है, फिर भी तुम नहीं खोजते।' दादी नै तीसरी पीढ़ी फेर टोक दी। इबकै दादी की झिड़की तै बेटे का मुंह बण ग्या।

'जिसे तुम सूगली कहते हो, वो सुगली है। बड़ी ऊ की मात्रा से जो गंदगी का पर्याय बन जाती है, वहीं छोटे उ की मात्रा लगते ही वह सुन्दरतम स्त्री, यानी सुगली हो जाती है। सुंदर वही होता है जो सुंदरता फैलाता है।' दादी की बात सुणकै बाळकां नै नई जानकारी मिलणी ही थी। इस जानकारी तै दोनूं भाण-भाई हैरान रै गे।

'मैंने कहा था ना कि जब तक मेहनत नहीं करोगे, सब आसान लगेगा। पर बिना मेहनत किए, तुम मृत देह यानी बिना आत्मा वाले शरीर जैसे रहोगे।' दादी की कही बात इबकै भी बाळकां नै शायद ही समझ आई हो मण जिसै या बात समझ आणी चहिए थी, उसनै बराबर समझ आ गी थी।

सुगली का अपणै गांव की ओड का चक्कर बच ग्या। उसकी अपणी माँ तै सवाल करण की परेसानी खतम हो गी थी। सबतै बड़ी बात या हुई कै आज तक उसनै अपणे नाम कै कारण जो सरम आया करै थी, वा सरम जाती रही। उपर तै हुयो यो अक उसे अपणें आप तै प्यार-सा होण लग ग्या था। जिस नाम नै आज ताईं उसे परेसानी मै राख्या, आज उसी नाम नै सुगली तै भौत घणी खुसी दे दी थी। दिन भर काम करते हुए उसकै हाथों मै जोश बण्या रह्या। कितणी ही बार वा कोई गीत गुनगुणाती हुई चानचुक्यां ही चुप हो गी। कितणी ही बार वा अपणै तै ही सरमा कै झेंप गी। देख्यो जाय तो बदल्यो कुछ भी नहीं थो, इसकै बावजूद सुगली कै लिए के बेरो के बदळ ग्या थो। मुस्कान उसकै होठां पै फैल गी थी। उस दिन काम पूरा करण कै कई देर बाद सुगली अपणे घर कै लिए रवाना हुई।

यह टेम जल्दी सुबेरे बाळकां कै सकूल जाण को बखत थो। एक ओड नै नीरजा अपणे बुजूर्ग सास-ससुर खातर कोरै दूध की चाय चढ़ा री थी, तो दूसरी ओड बाळकां कै नास्ते की तैयारी भी कर री थी। इसी बखत वा साथ की साथ मै बाळकां खातर सकूल कै टीपन को नास्तो भी बणा री थी। बीच मै ही उसकै याद आयी कि अपणै आदमी खातिर कम दूध की चाय तो इब ताईं चढ़ाई ही नहीं सै। इतणी भागदौड मै उसकी सांस फूलण लाग गी थी। ओर दिन सूरज निकलण तै पहले दरवाजे की घंटी बजणे का मतलब हुया करतो अक सुगली आ पौंची सै। वा आवंते ही नीरजा को आधो काम सम्हाळ ले थी। आज तै बाळकां के पेपर सरू हो रै सै। काल जाते हाणी वा कह कै गई थी, 'भाभी, सुबेरे आऊं सूं।' फेर...

दोनूं बाळक सकूल चले गै थे। सूरज निकळ आयो थो मण इब ताईं सुगली को कोई एरो-बेरो नहीं थो। नीरजा नै दो बार फोन भी करयो लेकिन उसका फोन स्विच ऑफ बता रह्या था। सास-ससुर पड़ोस कै बाग मै सुबह की सैर करकै उल्टे घर आ लियै थे, उनकै खातिर नीरजा नै दूसरी बार चाय चढ़ा दी थी। अपणै आदमी की पसंद का नाश्ता बणाते-बणाते बीच मै नीरजा नै एक बार फेर उस्सी नंबर पर फोन लगायो। फोन लगातार ऑफ ही आतो रह्यो। सबकै नास्ते-पाणी को काम निपटा कै नीरजा नै बर्तना को मोर्चो सम्हाळ लियो। एक ओड उसनै कपड़े धोण खातिर मसीन लगाई अर दूसरी ओड दोफर के रोटी-टूक की तैयारी सुरू कर दी। इब ताईं उसनै फुर्सत नहीं मिली थी अर ना एक भी टूक मुंह मै राख्यो थो। इतणो सब करते-करते उसनै महसूस हुयो कै इब उसकी हिम्मत जवाब दे री सै। 'आज मेरे तै घर की सफाई ना होगी।' उसनै अपणी सेहत के हालत खुद तै कुबूले।

'एक बजण नै आयो, इब ताईं नहीं आई। कित रह गी आज वा?' झुंझळ बढ़ री थी। एक बार फेर फोन लगायो मण इस बार भी परिणाम सिफर। दिनभर वा गरहस्थी की जिम्मेदारियां तै जूझती रही। दिन ढ़लण नै थो। पति कै काम तै वापस आवतें ही वा ट्रे मै चाय कै कप के साथ हाजिर थी। थकान पर पार पाण खातर उसनै अपणे लिए भी चाय बणा ली। पति नै आदतन समाचार देखण खातर टेलीविजन चालू कर लियो थो। सक्रीन पै झुग्गी-झोपड़ी दिख री थी। एक झोपड़ी कै भार बैठी बीरबानी नै देखकै नीरजा अचानक चौंक गी।

''सुगली!'' उसकै मुं तै बस या ही आवाज निकळी। आवाज पूरै घर मै फैल गी।
''कित सै?'',

''आ गी के?'' हिसे सवालां की गूंज तै घर भर ग्यो। धीरे-धीरे सारै परिवार आळे टेलीविजन कै सामणे थे अर सक्रीन पै दिख

री थी, सुगली।

दरवाजे की घंटी बाजण लाग री थी। हैरान-परेशान सै परिवार को कोई आदमी इस न्यूज नै बीच मै छोड़कै दरवाजो खोलण जाण नै तैयार नहीं थो। सास-ससुर तो बुजूर्ग सै, बाळक छोटे सै और पति तो थक-हार कै घर आयो थो। वैसे भी सारै सुगली की न्यूज जाणना चाह्वै थे, नीरजा अकेली ही थी जो इस टेम खाली थी अर इस जिम्मेदारी नै निभा सकै थी। कई बार और लगातार बजती दरवाजे की घंटी तै परेशान होकै नीरजा ही दरवाजो खोलण पौची।

उसकै सामणै सोसायटी कै कुछ पदाधिकारी, चेयरमैन और मैनेजर खड़े थे। इन सबनै आयो देखकै सारस्वत जी की थकान अचानक मिट गी। चाय को कप ट्रे मै वापस धरकै सारस्वत जी बैठक मै आ पहुँचे। नीरजा का ससुर जी भी न्यूज बीच मै छोड़कर इस मीटिंग का हिस्सा बणने कै लिए पहुँच गै थे। जाती सर्दियों की देर शाम मै सोसायटी के परमुख सदस्य फरमान ल्याये थे अक काल तै सुगली का सोसायटी मै आणा-जाणा मना सै। दिल्ली मै हुये बलात्कार कांड का कोर्ट तै फैसला आ गया था। टेलीविजन मै या ही न्यूज चाल री थी। आठ साल लाग गे थे सुपर ट्रैक कोर्ट तै फैसला आण मै। सजा कै अनुसार सुगली के बेटे नै फाँसी की सजा सुणाई गई थी। 'बलात्कारी की माँ हमारी सोसायटी में नहीं आएगी। उसके सोसायटी में आने से हम सबकी बदनामी होगी।' समाज कै महत्तवपूरण लोगां नै एकसाथ मिलकै यो निर्णय लियो थो।

'बलात्कारी उसका बेटा है, वह नहीं है। उसे किस बात की सजा दी जा रही है?' परिवार नै चुप बैठे देखकै नीरजा बोली।

'उसके सोसायटी में आने से हमारी सोसायटी में मिडिया भी आने लगेगी। हम सब इज्जतदार लोग हैं। हमारी बदनामी होगी।' कमेटी कै लोग अपणे निर्णय पै अडिग थे।

नीरजा याद कर री थी कै जद सासू माँ की तबीयत खराब हुई थी उस टेम किस ढ़ाल सुगली नै उनका ध्यान राख्या था। हर दिन उनकी मालिश किया करै थी। बाळकां कै जूते चमकाणे हों या उनकी फरमाइश का भोजन पकाणा हो, सुगली हमेशा आगे रहै सै। एक बार नीरजा कै बुखार चढ़ गयो थो, उस बार भी सुगली नै पूरे घर की जिम्मेदारी अकेले अपणे उपर ले ली थी जबकि सोसायटी के इक्का-दुक्का लोग ही उसका हाल पूछण आए थे। जो हाल लेण आए, उनका चाय-पाणी भी सुगली नै ही किया था।

'बेटे की गलती की सजा उसकी माँ को नहीं दी जानी चाहिए। उसका काम छूटा तो वो भूखी मर जाएगी या पेट भरने के लिए चोरी करेगी। तब भी तो हम ही कसूरवार होंगे ना।' नीरजा सोसायटी कै सुणाए फैसले कै खिलाफ थी।

'सारस्वत जी कामवालियों का क्या है, एक हटाओ तो चार नई आ जाती हैं। इज्जत गई तो नहीं लौटती। भाभीजी को दूसरी कामवाली मिल जाएगी।' अपणे तर्क पै अडिग कमेटी कै सदस्य, सारस्वत परिवार नै समझा-बुझाकै कै वापस चलैगे।

''सुगली हर सुख-दुख मै मेरे साथ खड़ी रही। आज उस पै दुख आयो सै तो कै मैं उसको साथ छोड़ द्यूँ?'' नीरजा कह री थी।

'हम सोसायटी में रहां सां। उरै के नियम तो मानणे ही पड़ैगे।' पति ने समझाण की कोसिस की।

'मैं सोसायटी की लुगाइयों तै बात करूंगी। काल नै जैं उनकै परिवार कै किसी आदमी नै ऐसी हरकत कर दी अर आदमी कै सजा होते ही उस परिवार नै भी सोसाइटी तै भार लिकाड दियो जाय जद?' नीरजा बोलती जा री थी।

'कोई तेरो साथ नहीं देवैगो। जा, बात करकै देखले।' पति नै चिढ़कै कही।

'मैं एनजीओ कै धोरे जाऊंगी या महिला आयोग... सुण, तूं तो मेरै साथ सै न।' अचानक उसनै पलट कै अपणे पति तै सवाल कर्यो। नीरजा कै पति नै इस सवाल की उम्मीद नहीं थी। ससुर जी चुपचाप उसनै घूरते रहे। कुछ देर ताईं इंतजार करकै नीरजा उठ खड़ी हुई।

उरै दीमक को प्रकोप बढ़ रह्यो सै। उसनै इस तरह कै जीव-जंतुआं तै लिजलिजी सी आवै सै। उसनै महसूस हो रह्यो थो अक देर ताईं एक ढ़ाल बैठे रहण कै कारण वा जड़ होण लाग गी सै। जैसे दीमकां नै धरती तै उसकै सरीर मै घुसण का रास्ता बणा लिया हो और ईब वे उसकै शरीर मै खून कै साथ-साथ बहण लाग री सै। लगातार बढ़ती दीमकां नै उसकै हार्ट तक पहुँचण का रास्ता मिल ग्या सै। उसनै बेरा सै कै इसका परिणाम हार्ट अटैक ही होणा सै। हार्ट अटैक का मतबल मौत निश्चित सै। अचानक वा उठ खड़ी हुई। वा इस अटैक तै खुदनै बचा लेणा चाह्वै थी। पति नै हैरान हो कै उसकी ओड देख्या। घर मै आए घणे सारे आदमियों कै कारण बच्चे तो पहले ही सहम गे थे। इबकै सास-ससुर भी उसकी इस हरकत पै अचकचा गै। इस सबकै बावजूद नीरजा नहीं रूकी। उसकै कदम सुगली के घर की ओर बढ़ चले। उसनै बेरा सै कै अपणे घर में लगी दीमक का ईलाज उसनै खुद ही करणा पडैगा। हो सकै सै कै दवाई की कड़वाहट पूरे परिवार नै भी झेळणी पड़ ज्या। जै इस्सो हुया तब भी वा अपणा घर बचाणै खातर इस बिमारी का ईलाज करैगी, जरूर करैगी।

***